'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न'

पुस्तक पर आधारित...

जैन प्रश्नशास्त्र एवं भाग्यशाली रत्न चयन

प्रश्नशास्त्र को फलित ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। जन्मपत्री की अनुपस्थिति में प्रश्नकर्ता के प्रश्नानुसार तात्कालिक समाधान अथवा फल बताने के लिए यह शास्त्र बहुत उपयोगी है। उपलब्ध दिगम्बर जैन ज्योतिष ग्रन्थों में प्रश्नशास्त्र का सर्वाधिक चलन है। जैनाचार्यों ने इस शास्त्र का बहुत ही सुन्दर तथा सरल भाषा में विवेचन किया है।

प्रश्नकर्ता के फल तथा समाधान बताने में मुख्यतः तीन विधियाँ प्रचलित हैं-

1. तात्कालिक समय की प्रश्न कुण्डली बनाकर ग्रहों की विभिन्न राशिगत स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार गणनाएँ हैं।
2. स्वरशास्त्र के अन्तर्गत सूर्य एवं चन्द्र स्वर की स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार प्रश्नकर्ता का अदृष्ट होना है।

3. प्रश्नकर्ता के प्रश्नों से उसके मनोभाव आदि के ज्ञान द्वारा। यह पूर्णतः मनोविज्ञान पर आधारित है।

अपने कार्य के लिए हम ज्योतिषीय गणनाओं द्वारा रत्नों का चुनाव करेंगे। शोध कार्य को आगे बढ़ाने के लिए तथा गणना किए गए रत्न की अपने लिए शुभता की परख के लिए स्वर शास्त्र तथा प्रश्नकर्ता के मनोभाव का भी सहारा लिया जा सकता है। संयोग एवं सौभाग्य से चुने गये रत्न की दोनों विधियों से यदि पुष्टि भी हो जाती है तो उस रत्न को बिना किसी शंका के धारण किया जा सकता है। वह शुभ फल देगा ही देगा।

सर्वप्रथम ध्यान दें कि प्रश्नकर्ता रत्न सम्बन्धी प्रश्न जब पूछता है तो उसका मुॅह किस दिशा-विदिशा की तरफ होता है। प्रत्येक दिशा का एक अंक निश्चित है। जिस तरफ मुॅह करके प्रश्न किया जाए वह अंक लिख लें।

दिशा-विदिशा	सम्बन्धित अंक
पूरब	1
पश्चिम	2
उत्तर	3
दक्षिण	4
उत्तर-पूरब	5
दक्षिण-पश्चिम	6
उत्तर-पश्चिम	7
दक्षिण-पूर्व	8

दिन-रात के आठ प्रहरों में से जिस प्रहर में प्रश्न किया गया है, वह भी लिख लें। एक प्रहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय से तीन घंटे पहला प्रहर। उसके बाद के तीन घंटे दूसरा प्रहर आदि।

तीसरी संख्या वार की लिख लें अर्थात सप्ताह के जिस दिन में प्रश्न किया गया हो उसकी संख्या। यहॉ रविवार को 1, सोमवार को 2, मंगलवार को 3, बुधवार को 4, गरुवार को 5, शुक्रवार को 6 तथा शनिवार को 7 मानें।

चौथी संख्या के लिए देखें कि प्रश्न करते समय नक्षत्र कौन सा था। उस नक्षत्र की संख्या भी लिख लें। अश्वनी, भरणी, कृत्तिका आदि नक्षत्रों की संख्या क्रमशः 1, 2, 3 आदि हैं।

मान लीजिए कोई व्यक्ति आपसे अपना अनुरुप रत्न-उपरत्न जानने के लिए जिस समय प्रश्न पूछता है, उस समय दिशा, प्रहर, वार तथा नक्षत्रों के अंक क्रमशः 8, 2, 5 तथा 8 (पुष्य नक्षत्र) हैं। इन चारों अंकों को परस्पर जोड़ लें- 8+2+5+8=23

इस योग में 84 रत्न - उपरत्नों की संख्या भी जोड़ दें - 23+84=107

प्राप्त योगफल को 10 से भाग दें। 0, 1, 2 से 9 तक जो शेष बचे, उसे लिख लें। शेष बचा अंक आपके भाग्यशाली रत्न का द्योतक है। प्रत्येक अंक कौन सा रत्न दर्शायेगा। यह निम्न से देखें।

अंक	रत्न
1 तथा 8	मूंगा
2 तथा 7	हीरा
3 तथा 6	पन्ना
4	मोती
5	माणिक्य
9	पुखराज
10 अर्थात 0	नीलम

ध्यान रखें, नवरत्नों में जहां गोमेद तथा लहसुनिया को स्थान नहीं दिया गया है। रत्न उपलब्ध न हो सके तो उनके उपरत्न धारण कर सकते हैं। भाग्यशाली रत्न गणना

करने के लिए जैनाचार्यों ने योगफल को भाग देने के लिए 10 का अंक ही क्यों चुना, नवरत्नों की संख्या 9 अथवा राशियों की संख्या 12 क्यों नहीं, यह विवादास्पद है। तथापि उक्त गणना से रत्न-उपरत्न चुन कर हजारों प्रश्नकर्ताओं को लाभ पहुचा है। अपने शोध कार्य में मैने 10 के स्थान पर राशियों की कुल संख्या 12 से भी योग फल से भाग देकर अनेक बार परखा है। शनि की राशि कुंभ अर्थात अंक 11 को मैंने राहु के रत्न गोमेद तथा मंगल की 8वीं वृश्चिक राशि अर्थात अंक 8 के लिए मैने लहसुनिया रत्न प्रयोग करवाया। दोनों के मुझे संतोष जनक परिणाम मिले। सुझाव भी यही है कि नवरत्नों में गोमेद तथा लहसुनिया रत्न को अनदेखा न किया जाए और इसके लिए कुल योगफल को 12 से भाग दिया जाए।

प्रश्नगत गणना में आए योगफल को 10 से भाग देने पर शेष 7 बचेगा। जो कि हीरे का द्योतक है। यदि योगफल में 12 से भाग दिया जाए तो शेष रहेगा 11 जो कि गोमेद रत्न का द्योतक है। निष्कर्ष यही निकलता है कि हीरे से अधिक शुभफल प्रश्न कर्ता को गोमेद देगा।

अब यह बौद्धिक पाठकों के अपने-अपने बुद्धि एवं विवेक पर निर्भर करेगा। कि वह कौन सी विधि अपनाएं।

एक बार प्रश्नकर्ता के रत्न का चुनाव हो जाने पर प्रश्नकर्ता के फल की अन्य 2 विधियों के माध्यम से यह भी स्पष्ट कर सकते हैं कि उक्त रत्न हमें त्वरित फल देगा अथवा फल तो देगा परन्तु विलंब से और फल देगा ही नहीं अर्थात रत्न का चयन ठीक नहीं हुआ है, वह शुभ सिद्ध नहीं होगा।

1. सर्वप्रथम स्वच्छता से निम्न यंत्र बना लें।

1	2	3
6	5	4
7	8	9

प्रश्नकर्ता से कहें कि यंत्र के किसी भी कोष्ठक पर अपने दांये हांथ की अनामिका उंगली रखे। मन में अपने इष्ट का ध्यान करते हुए यह भाव बनाए रखें कि अमुक रत्न अथवा उपरत्न मुझे अवश्य लाभ देगा।

यदि प्रश्नकर्ता 1, 4, 5, 6, 9 अंकों में से किसी एक पर उंगली रखता है तो समझिये कि रत्न का चुनाव बिल्कुल ठीक है और वह लाभदायक सिद्ध होगा। यदि वह 3 अथवा 7 पर उंगली रखता है तो रत्न का प्रभाव होगा तो परन्तु प्रभाव में समय भी लग सकता है। यदि प्रश्नकर्ता की उंगली 2 अथवा 8 अंकों में से किसी एक के ऊपर रखी जाती है तो आप तुरंत उसे स्पष्ट कर दें कि रत्न का चुनाव उसके लिए ठीक नहीं हुआ है और उससे लाभ मिलने में संशय ही रहेगा।

2. प्रश्नकर्ता की उस समय की गतिविधियों को ध्यान में रखें जिस समय वह अपने अनुरुप चुने गए रत्न के सम्बंध में प्रश्न करता है। यदि ऊपर देखते हुए अथवा आज्ञाचक्र का स्पर्श करके ध्यान करते हुए अथवा अपने ईष्ट देव की पूजा-अर्चना करते हुए प्रश्न करता है तो आप समझ लीजिए कि चुना गया रत्न उसके लिए शुभ रहेगा। यदि वह शरीर को खुजाता है अथवा माथे को रगड़ता है या कुछ सोचता है फिर ध्यान की मुद्रा में आ जाता है तब समझ लीजिए कि रत्न उसके लिए शुभ तो परंतु उसके द्वारा लाभ प्राप्त करने में कुछ विलंब हो सकता है, यदि प्रश्न करते समय वह इधर-उधर देखता हुआ विचलित-सा लगता है, धरती पर पैर रगड़ता है, उंगलियों अथवा नाखून से कुर्सी-मेज अथवा धरती पर बैठा हुआ है तो नीचे खरोंचने लगता है तो वह रत्न उसके लिए शुभ फल कभी नहीं देगा।
3. रत्न धारण करने संबंधी प्रश्नकर्ता के प्रश्न पूछते समय का लग्न स्पष्ट करिए। यह देखें कि प्रश्न के समय कौन सी राशि लग्न में थी। यदि प्रश्न के समय लग्न में मेष, मिथुन, कन्या अथवा मीन राशियॉ हैं तो रत्न का चुनाव ठीक है। वृष, कर्क, सिंह अथवा तुला राशियों में रत्न ठीक चुना गया है परन्तु उसके शुभ फल में विलंब हो सकता है। वृश्चिक, धनु, मकर अथवा कुंभ लग्न में किया गया प्रश्न इस

बात का द्योतक है कि चुना गया रत्न अथवा उपरत्न प्रश्न कर्ता के लिए शुभ सिद्ध नहीं होगा।

4. प्रश्नकर्ता से 1 से लेकर 108 तक का कोई भी अंक अकस्मात् सोचने को कहें। जो भी अंक वह सोचे उसको 12 से भाग करें। यदि शेष 2, 6, 11 अथवा शून्य बचता है तो रत्न का चुनाव बिल्कुल ठीक हुआ। 1, 3, 7 अथवा 9 शेष बचे तो भी रत्न ठीक है। लाभ मिलेगा परंतु बिलंब से। परंतु शेष यदि 4, 5, 8 अथवा 10 आये तो समझिये कि रत्न का चुनाव ठीक नहीं हुआ है।

इस प्रकार से जैन-सिद्धांत ज्योतिष विषयक ग्रंथों के अनेक प्रकरण सामने आते हैं। जहां उनके उपयोग से तथा साथ-साथ अपने शोध परक प्रयासों से, अपनी बुद्धि-विवेक से तथा प्रज्ञा ज्ञान से रत्नों-उपरत्नों का उचित चयन किया जा सकता है। पाठक इसे अपना कर लाभ उठाएं, यही कामना है। रत्न चयन करने की 25 से अधिक विधाओं को प्रयोग करके भाग्यशाली रत्न चयन करने के शोधपूर्ण कार्य में यदि आगे बढ़ना चाहते हैं तो आप पुस्तक, 'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न' का भी अध्ययन-मनन कर सकते हैं।